सावित्री–सत्यवान कथा

Savitri–Satyavan Katha

Source: Internet Sacred Text Archive — Mahabharata Book 3, Vana Parva (Ganguli translation; public-domain edition). Also compared: Vana Parva section 291 — Savitri's birth and search (printed pages 570–572); Vana Parva section 292 — Savitri chooses Satyavan (printed pages 572–574); Vana Parva section 293 — marriage and forest life (printed pages 574–575); Vana Parva section 294 — the foretold day (printed pages 575–577); Vana Parva section 295 — Savitri's dialogue with Yama (printed pages 577–581); Vana Parva section 296 — return to the hermitage (printed pages 581–584); Vana Parva section 297 — Dyumatsena's restoration and close (printed pages 584–585).

Valkala's own retelling of the katha in the Mahabharata, Vana Parva, Pativrata-mahatmya Parva, Ganguli sections 291–297, not a transcription of the original text.

प्रथम भाग — सावित्री का जन्म और स्वयं चुनाव की यात्रा

KATHA 291

वनवास में युधिष्ठिर ने ऋषि मार्कण्डेय से पूछा कि क्या कभी किसी स्त्री ने द्रौपदी जैसा भारी दुःख सहकर अपने परिवार का सहारा बनाया है। उत्तर में मार्कण्डेय ने मद्र देश के राजा अश्वपति की पुत्री सावित्री की कथा आरम्भ की। अश्वपति सन्तान चाहते थे और दीर्घकाल तक संयम तथा देवी सावित्री की उपासना करते रहे। कथा के अनुसार देवी ने उन्हें तेजस्वी पुत्री का वर दिया। उसी अनुग्रह के स्मरण में कन्या का नाम सावित्री रखा गया। वह बड़ी होकर विदुषी, दृढ़ और प्रभावशाली हुई, पर उसके लिए कोई वर आगे नहीं आया। तब अश्वपति ने उसे योग्य जीवन-साथी स्वयं खोजने की अनुमति दी। सावित्री वृद्ध मन्त्रियों के साथ आश्रमों और वन-प्रदेशों की यात्रा पर निकली, लोगों और स्थानों को समझा और अपनी ओर से निर्णय करने लगी। कथा का यह आरम्भ उसे केवल किसी की पत्नी के रूप में नहीं, बल्कि देखने, विचारने और चुनने वाली व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है।

During the forest exile, Yudhishthira asks the sage Markandeya whether another woman has endured suffering like Draupadi and become a source of rescue for her family. Markandeya answers with the story of Savitri, daughter of King Ashvapati of Madra. Longing for a child, Ashvapati practises discipline and worships the goddess Savitri for many years. The narrative says the goddess grants him a radiant daughter, who is named Savitri in memory of that blessing. She grows into a learned, resolute and striking young woman, yet no suitor comes forward. Ashvapati therefore permits her to seek a suitable partner herself. Accompanied by elderly counsellors, Savitri travels among hermitages and forest regions, observes people and places, and prepares to make her own considered choice. The opening presents her not only as a future wife, but as a person who sees, deliberates and decides.

द्वितीय भाग — सत्यवान का चुनाव और नारद की चेतावनी

KATHA 292

लौटकर सावित्री ने पिता और उपस्थित नारद को बताया कि उसने सत्यवान को चुना है। सत्यवान शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र था। द्युमत्सेन दृष्टि खो चुके थे और शत्रु ने उनका राज्य छीन लिया था, इसलिए परिवार वन में रहता था। नारद ने सत्यवान को सत्यप्रिय, बुद्धिमान, साहसी, उदार और माता-पिता के प्रति समर्पित बताया, पर साथ ही कहा कि एक वर्ष के भीतर उसकी मृत्यु होगी। अश्वपति ने पुत्री से फिर विचार कर किसी और को चुनने को कहा। सावित्री ने उत्तर दिया कि उसने मन से सोचकर एक बार निर्णय किया है और अब दूसरा चुनाव नहीं करेगी। यह सुनकर नारद ने उसकी अडिगता स्वीकार की और विवाह का अनुमोदन किया। कथा में भविष्यवाणी पवित्र कथा की रचना-युक्ति है; यह वास्तविक जीवन में भाग्य बताने या किसी जोखिम को अनदेखा करने की सलाह नहीं। यहाँ सावित्री का निर्णय उसके अपने विचार और जानकारी के बाद लिया गया चुनाव है।

On returning, Savitri tells her father and the visiting Narada that she has chosen Satyavan. He is the son of Dyumatsena, the dispossessed king of Shalva. After losing his sight, Dyumatsena was driven from his kingdom, and the family now lives in the forest. Narada praises Satyavan as truthful, intelligent, brave, generous and devoted to his parents, but predicts that he will die within a year. Ashvapati asks his daughter to reconsider and choose someone else. Savitri replies that she has already made one deliberate choice in her mind and will not choose again. Narada accepts her resolve and approves the marriage. The prophecy is a device within a sacred narrative, not advice to predict fate or ignore real-world risks. Within the story, Savitri's decision is her own considered choice, made with knowledge of the warning.

तृतीय भाग — विवाह और वन का वर्ष

KATHA 293

अश्वपति सावित्री को लेकर द्युमत्सेन के आश्रम पहुँचे। द्युमत्सेन ने पहले वन-जीवन की कठिनाई का उल्लेख किया, पर अश्वपति ने कहा कि सावित्री सुख-दुःख की अस्थिरता समझती है और निर्णय कर चुकी है। दोनों परिवारों की सहमति से विवाह हुआ। अश्वपति लौट गए और सावित्री ने आभूषण तथा राजसी वस्त्र अलग रखकर आश्रम का सरल जीवन अपनाया। वह सत्यवान, सास शैव्या और ससुर द्युमत्सेन की सेवा और सम्मान में लगी रही। बाहर से वह दिनचर्या निभाती रही, भीतर नारद की कही अवधि याद रखकर दिन गिनती रही। सत्यवान के साथ उसका सम्बन्ध केवल आने वाली विपत्ति की प्रतीक्षा नहीं था; कथा उसे परिवार में विश्वास अर्जित करते, कठिन जीवन में सहभागी बनते और अपने अगले कदम की तैयारी करते दिखाती है। प्राचीन पाठ की सेवा और वैवाहिक भूमिकाएँ अपने सामाजिक समय से आती हैं; उन्हें आज हर स्त्री या विवाह के लिए एकमात्र नियम नहीं बनाया गया है।

Ashvapati takes Savitri to Dyumatsena's hermitage. Dyumatsena first points to the hardship of forest life, but Ashvapati says Savitri understands that comfort and suffering are changeable and has made her decision. With both families' agreement, the marriage takes place. After Ashvapati returns home, Savitri puts aside royal dress and jewellery and joins the hermitage's simple life. She treats Satyavan, her mother-in-law Shaivya and Dyumatsena with care and respect. Outwardly she fulfils daily responsibilities; inwardly she remembers Narada's period and counts the days. Her relationship with Satyavan is not shown merely as waiting for disaster: the narrative shows her earning trust, sharing a difficult life and preparing for what may come. The source's service ideals and marital roles belong to its ancient social setting and are not presented as the only rule for every woman or marriage today.

चतुर्थ भाग — नियत दिन और सावित्री का साथ

KATHA 294

नारद द्वारा बताई अवधि पूरी होने लगी तो सावित्री ने तीन रात का अत्यन्त कठोर व्रत आरम्भ किया। द्युमत्सेन ने उसकी कठिनता देखकर चिन्ता जताई; कथा में सावित्री अपने संकल्प पर बनी रहती है। यह प्रसंग स्रोत का वर्णन है, किसी पाठक के लिए ऐसा उपवास करने का निर्देश नहीं। नियत दिन उसने प्रातःकर्म और प्रार्थना की, बड़ों का आशीर्वाद लिया और सूर्यास्त के बाद भोजन करने की बात कही। जब सत्यवान लकड़ी और फल लाने वन जाने लगा, सावित्री ने साथ चलने की इच्छा रखी। सत्यवान ने उसकी उपवास-जनित कमजोरी की चिन्ता की और माता-पिता से अनुमति लेने को कहा। सावित्री ने शैव्या और द्युमत्सेन से अनुमति माँगी; उन्होंने उसके पहले कभी कुछ न माँगने को याद कर अनुमति दे दी। वन की शोभा देखते हुए भी सावित्री का ध्यान समय पर था। वह भय के बावजूद सत्यवान से अलग नहीं हुई और उसके काम में बाधा न बने, इसका भी ध्यान रखा।

As Narada's predicted period nears its end, Savitri begins an exceptionally severe three-night fast. Dyumatsena worries about its difficulty, while in the story she remains committed to her vow. This is a description of the source, not an instruction for readers to undertake such a fast. On the appointed day she completes morning rites and prayer, receives the elders' blessings and says she will eat after sunset. When Satyavan prepares to gather wood and fruit, she asks to accompany him. Concerned about her weakness after fasting, he asks her first to obtain his parents' permission. Savitri asks Shaivya and Dyumatsena, who remember that she has never requested anything before and allow her to go. Although she notices the forest's beauty, she also watches the passing time. Despite fear, she stays beside Satyavan while taking care not to hinder his work.

पञ्चम भाग — यम से संवाद और पाँच वर

KATHA 295

लकड़ी काटते समय सत्यवान के सिर में तीव्र पीड़ा हुई। उसने सावित्री की गोद में विश्राम माँगा और शीघ्र ही निश्चेष्ट हो गया। कथा में यम प्रकट होकर उसके प्राण ले जाते हैं। सावित्री शोक में भी यम के पीछे चलती है और धर्म, संगति, अहिंसा, दया तथा सत्य पर तर्क करती है। उसके विवेकपूर्ण वचनों से प्रसन्न होकर यम बार-बार वर देते हैं, पर पहले सत्यवान का जीवन छोड़कर। सावित्री द्युमत्सेन की दृष्टि और शक्ति, उनका राज्य, अपने पिता अश्वपति के लिए पुत्र और स्वयं सत्यवान से सन्तान का वर माँगती है। जब यम उस अंतिम वर को भी स्वीकार कर लेते हैं, सावित्री उसकी तार्किक परिणति सामने रखती है: सत्यवान के बिना सत्यवान से सन्तान का वर पूरा नहीं हो सकता। तब वह सीधे सत्यवान का जीवन माँगती है। कथा के अनुसार यम बन्धन खोलते हैं, सत्यवान को जीवन और दीर्घायु देते हैं और चले जाते हैं। सत्यवान चेतना में लौटता है। इस विजय को विवेक, साहस और संवाद की पवित्र कथा के रूप में पढ़ा गया है, मृत्यु या बीमारी पर निश्चित नियंत्रण के दावे की तरह नहीं।

While cutting wood, Satyavan develops intense pain in his head. He asks to rest in Savitri's lap and soon becomes motionless. In the story, Yama appears and carries away his life. Even in grief, Savitri follows and reasons with Yama about dharma, good company, non-injury, compassion and truth. Pleased by her thoughtful words, Yama repeatedly offers boons, at first excluding Satyavan's life. Savitri asks for Dyumatsena's sight and strength, the return of his kingdom, sons for her father Ashvapati, and children for herself with Satyavan. When Yama grants that last request, Savitri points out its logical consequence: a boon of children with Satyavan cannot be fulfilled if Satyavan remains dead. She then asks directly for his life. The narrative says Yama releases him, grants life and longevity, and departs. Satyavan regains consciousness. The episode is presented as a sacred story of reason, courage and dialogue, not as a promise of control over death or illness.

षष्ठ भाग — रात्रि में आश्रम वापसी

KATHA 296

जागने पर सत्यवान को केवल सिर की पीड़ा, नींद और एक तेजस्वी आकृति का धुँधला स्मरण था। रात गहरी हो चुकी थी। उसने माता-पिता की चिन्ता याद की और लौटने पर आग्रह किया। सावित्री ने उसे सहारा दिया, मार्ग पहचाना और दोनों आश्रम की ओर चले। उधर द्युमत्सेन की दृष्टि अचानक लौट आई थी, पर पुत्र और पुत्रवधू के न लौटने से वे और शैव्या व्याकुल थे। आश्रम के ऋषियों ने उन्हें धैर्य दिया। रात में सावित्री और सत्यवान पहुँच गए तो परिवार का भय कम हुआ। सत्यवान ने वन में बीमार पड़ने और सो जाने की बात कही; आगे का रहस्य वह नहीं जानता था। पूछे जाने पर सावित्री ने नारद की भविष्यवाणी और यम से मिले पाँच वरों का क्रम सबके सामने बताया। कथा में द्युमत्सेन की दृष्टि लौटना और सत्यवान का जीवित लौटना चमत्कारी घटनाएँ हैं। मानवीय स्तर पर प्रसंग देखभाल, घर लौटने की जिम्मेदारी, परिवार की चिन्ता और कठिन अनुभव को सच-सच बताने पर केन्द्रित है।

When Satyavan wakes, he remembers only the headache, sleep and a dim impression of a radiant figure. Night has fallen. Remembering how worried his parents will be, he insists on returning. Savitri supports him, finds the route and walks with him toward the hermitage. Meanwhile, Dyumatsena's sight has suddenly returned, but he and Shaivya are distraught because their son and daughter-in-law are missing. The hermitage sages try to reassure them. When Savitri and Satyavan arrive during the night, the family's fear eases. Satyavan explains that he became ill and slept in the forest; he does not know the rest. Asked to account for what happened, Savitri openly recounts Narada's prophecy and the sequence of five boons from Yama. Dyumatsena's recovered sight and Satyavan's return are miracles within the narrative. On a human level, the episode centres care, responsibility toward anxious family members, and truthful explanation after a difficult experience.

सप्तम भाग — राज्य की पुनर्प्राप्ति और कथा का समापन

KATHA 297

अगली सुबह शाल्व देश से लोग आए। उन्होंने बताया कि द्युमत्सेन का राज्य छीनने वाला शासक मारा गया है और प्रजा अपने पुराने राजा को वापस बुला रही है। द्युमत्सेन परिवार सहित लौटे, फिर राजसिंहासन पर स्थापित हुए और सत्यवान युवराज बना। कथा आगे सावित्री और सत्यवान के अनेक पुत्रों तथा अश्वपति के वंश-विस्तार को यम के वरों की पूर्ति बताती है। ये संख्याएँ और परिणाम कथा के धार्मिक संसार के दावे हैं, इतिहास या किसी व्रत के निश्चित फल नहीं। मार्कण्डेय समापन में युधिष्ठिर से कहते हैं कि जिस प्रकार सावित्री ने संकट में अपने परिवार को उठाया, उसी प्रकार द्रौपदी भी पाण्डवों के उद्धार में सहायक होगी। इस तरह कथा का मूल प्रसंग द्रौपदी के दुःख और सामर्थ्य पर लौटता है। इसका स्थायी संकेत अंधी आज्ञाकारिता नहीं, बल्कि सावित्री की सूचित पसंद, कठिन समय में उपस्थिति, नैतिक तर्क, करुणा और धैर्य है। पाठ का फल-वचन श्रद्धा से कथा सुनने वाले के सुख की बात करता है; यहाँ उसे भक्तिपरक आश्वासन माना गया है, गारंटी नहीं।

The next morning, people arrive from Shalva. They report that the ruler who seized Dyumatsena's kingdom has been killed and that the people are calling their former king home. Dyumatsena returns with his family, is restored to the throne, and Satyavan becomes crown prince. The narrative later presents the many sons of Savitri and Satyavan and the continuation of Ashvapati's line as fulfilments of Yama's boons. Those numbers and outcomes are claims within the story's religious world, not history or guaranteed fruits of a vrata. Markandeya closes by telling Yudhishthira that just as Savitri raised her family from crisis, Draupadi will help rescue the Pandavas. The frame therefore returns to Draupadi's suffering and strength. The durable emphasis is not blind obedience, but Savitri's informed choice, presence in adversity, ethical reasoning, compassion and perseverance. The source's closing promise of happiness for a reverent listener is presented as devotional assurance, not a guarantee.